इतना अपने मन में बिचार, सखी ने उस से कहा ऐ कमलाकर! तेरे तईं अनंगमंजरी ने कहा है कि तू आके मुझे जी दान दे. इन्ने कहा यह तो उन्ने मुझे जी दान दिया. इतना कह उठ खड़ा ज़ुआ. और सखी इसे अपने साथ लिये ज़ुए, उस के पास गई. यह वहां जाके देखे तो वह मुई ज़ुई पड़ी है. फिर इन्ने भी एक आह का नआरः मारा कि उस के साथ इस का दम निकल गया. और जब सु बह ज़ुई, उस के घर के लोग इन दोनों को मरघट में ले गये; और चिता चुनकर उन्हें रखके आग लगाई थी; कि इस में उस का खाविंद भी परदेस से मरघट की राह आ निकला. तब लोगों के रोने की आवाज़ सुनकर यह वहां गया, तो देखता क्या है कि इस की स्त्री पर पुरुष के साथ जलती है. यह भी बिरह से व्याकुल हो उसी आग में जल के मर गया. यह खबर नगर के लोग सुनके आपस में कहने लगे, कि ऐसा अचरज न आंखों देखा न कानों सुना.

इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा! इन तीनों में से कौन सा अधिक कामी ज़ुआ? राजा बोला कि उस का खाविंद अधिक कामी ज़ुआ. बैताल ने कहा किस कारण. राजा ने कहा जिन्ने, अपनी नारी को और के अर्थ मुई देख, क्रोध त्याग कर, उस के प्रेम में मगन हो जी दिया, यह अधिक कामी ज़ुआ. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरख़त पर जा लटका. राजा भी वोंही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

इक्कीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! जयस्थल नाम नगर. वहां का वर्द्धमान नाम राजा. उस के नगर में बिष्णुस्वामी नाम ब्राह्मण. उस के चार बेटे; एक ज्वारी, दूसरा कसबीबाज़, तिसरा छिनला, चौथा नास्तिक. एक दिन वह ब्राह्मण अपने बेटों को समझाने लगा, कि जो कोई जूआ खेलता है उस के घर में लक्ष्मी नहीं रहती. यह सुन वह ज्वारी अपने जी में बज़ुत दिक़ ज़ुआ. और फिर उन्ने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखता है, कि ज्वारी के नाक कान काट, देस से निकाल दीजे, कि और लोग जूआ न खेलें. और ज्वारी के जोरू लड़कों को घर में होते भी घर में न जानिये. क्यों कि नहीं मअलूम किस वक़्त हार दे. और जो बेस्या के चरित्रों पर मोहित होते हैं सो अपने जी को दुख बिसाते हैं. और कसबी के बस में हो सरबस अपना दे अंत को चोरी करते हैं. और ऐसा कहा है कि जो नारी आदमी के मन को एक घड़ी में मोह दे, ऐसी नारी से ज्ञानी दूर रहते हैं; और अज्ञानी उस से प्रीत कर अपना सत, शील, जश, आचार, बिचार, नेम, धर्म सब खोते हैं. और उस को अपने गुरु का उपदेस भला नहीं लगता. और ऐसा कहा है, कि जिस ने अपनी लाज खोई दूसरे की वह कब बेइज़्ज़त करने से डरता है.

और मसल है, कि जो बिलाव अपने बच्चे को खाता है सो चूहे को कब छोड़ेगा. फिर कहने लगा कि जिन्हों ने बालकपन में बिद्या न पढ़ी, और जवानी में काम से आतुर हो यौवन के गर्व में रहे; सो वृद्धकाल में पछताकर चिरस की आग में जलते हैं.

यह बात सुन, उन चारों ने आपस में बिचारकर कहा कि बिद्याहीन पुरुष के जीने से मरना भला है. इस से उत्तम यह है, कि बिदेस में जाकर बिद्या पढ़िये. यह बात आपस में ठान, वे एक और नगर में गये. और कितनी एक मुद्दत के बअ्द, पढ़के पंडित हो, अपने घर को चले. राह में देखते क्या है, कि एक कंजर मुए ऊए शेर की हड्डी, चमड़ा जुदाकर, गठड़ी बांध चाहे कि ले जाय; इस में उन्हों ने आपस में कहा कि आओ अपनी अपनी बिद्या आज़मावें. यह ठहरा, एक ने उसे बुलाकर कुछ दिया, और वह पोट ले उसे बिदा किया. और रस्ते से कनारे हो, उस मोट को खोल, एक ने सारी हड्डियां जा बजा लगा, मंच पढ़ छींटा मारा, कि वे हाड़ लग गये. दूसरे ने इसी तरह उन हड्डियों पर मास जमा दिया. तीसरे ने इसी भांति से मास पर चाम बिठा दिया. चौथे ने इसी रीत से उसे जिला दिया. फिर वह उठते ही इन चारों को खा गया.

इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा! उन चारों में कौन अधिक मूरख था? राजा बिक्रम ने कहा, जिस ने उसे जिला दिया सोई बड़ा मूरख था. और ऐसा

कहा है कि बुद्धि बिना बिद्या किसू काम की नहीं. बल्कि बिद्या से बुद्धि उत्तम है. और बुद्धिहीन इसी तरह मरते हैं, जैसे सिंह के जिलानेवाले मुए. यह बात सुन, बैताल उसी दरख़्त पर जा लटका. फिर राजा उसी तरह बांध कांधे पर रख ले चला.

बाईसवीं कहानी

बैताल बोला ऐ राजा! बिस्वपुर(१) नाम नगर. वहां का बिदग्ध नाम राजा. उस के नगर में नारायण नाम ब्राह्मण था. वह एक दिन अपने मन में चिन्ता करने लगा, कि मेरा शरीर वृद्ध ऊआ. और मैं दूसरे की काया में पैठने की बिद्या जानता हूं. इस से बिहतर यह है, कि इस पुरानी देह को छोड़, और किसू जवान के शरीर में जाके भोग करूं. जब वह यह अपने जी में बिचार कर चुका, और एक तरुन शरीर में पैठने लगा, तो पहले रोया, और पीछे हंसा; फिर उस में पैठके अपने घर में आया. लेकिन इस के सारे कुटुंब के लोग उस के करतब से वाकिफ़ थे. फिर उन के आगे कहने लगा कि मैं अब योगी ऊआ.

इतना कहके पढ़ने लगा आसा के सरोवर को तपस्या के तेज से सुखा, तिस में मन को रख, इंद्रियों को सिथल करे, सो योगी चतुर कहावे. और यह गति संसार के

(१) विश्वपुर.